15

नरेश मेहता

नरेश मेहता का जन्म 1922 ई. में मालवा (मध्य प्रदेश) के शाजापुर कस्बे में हुआ था। उनकी आरंभिक शिक्षा कई स्थानों पर हुई। उन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम. ए. किया। विद्यार्थी जीवन में उन्होंने स्वाधीनता आंदोलन में भाग लिया। कुछ समय तक उनका संबंध वामपंथी राजनीति से रहा और बाद में वे गांधी शांति प्रतिष्ठान से भी जुड़े। 2000 ई. में इनका स्वर्गवास हुआ।

नरेश मेहता ने आरंभ में **आज** और **संसार** (दैनिक समाचार पत्र) में काम किया। आगे चलकर उन्होंने राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस के साप्ताहिक पत्र **भारतीय श्रमिक** का संपादन किया। उन्होंने प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिका **कृति** का भी संपादन किया था।

नरेश मेहता नई कविता के कवि हैं। उनकी कविता में प्रकृति एवं लोकजीवन के विविध चित्र मिलते हैं। वे विश्वबंधुत्व, करुणा तथा समरसता के प्रति आस्थावान कवि हैं। आधुनिक समस्याओं के प्रति एक दार्शनिक दृष्टि इनकी कविताओं की एक अन्य विशेषता है। उन्हें **मध्यप्रदेश शासन सम्मान, साहित्य अकादमी पुरस्कार** और **ज्ञानपीठ पुरस्कार** से सम्मानित किया गया।

उनकी प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं- **महाप्रस्थान, संशय की एक रात, प्रवाद पर्व, मेरा समर्पित एकांत, वनपाखी सुनो** तथा **प्रार्थना पुरुष**। 'समिधा' नाम से उनका संपूर्ण काव्य दो खंडों में प्रकाशित हुआ है।

*संकलित कविता में एक वैदिक सूक्ति **चरैवेति** का प्रयोग नए संदर्भ में नए अर्थ के साथ करते हुए कवि ने सदा आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है। कविता में प्रयुक्त सूर्य, तारे, नदी, मेघ आदि आदिम बिंब हैं, जो नए संदर्भों में स्वाधीनता, प्रगति, विकास तथा समृद्धि के प्रतीक बनकर प्रस्तुत हुए हैं।*

चरैवेति

चलते चलो, चलते चलो!
सूरज के संग-संग चलते चलो, चलते चलो!
तम के जो बंदी थे
सूरज ने मुक्त किए
किरनों से गगन पोंछा
धरती को रंग दिए
सूरज को विजय मिली ऋतुओं की, रात हुई
कह दो इन तारों से चंदा के संग-संग चलते चलो!
रत्नमयी वसुधा पर
चलने को चरन दिए
बैठी उस क्षितिज पार
लक्ष्मी शृंगार किए,
आज तुम्हें मुक्ति मिली, कौन तुम्हें दास कहे?
स्वामी तुम ऋतुओं के संवत् के संग-संग चलते चलो!
नदियों ने चल कर ही
सागर का रूप लिया
मेघों ने चल कर ही
धरती को गर्भ दिया
रुकने का मरण नाम, पीछे सब प्रसार हैं।
आगे हैं रंग-महल, युग के ही संग-संग चलते चलो!

मानव जिस ओर गया
नगर बने, तीर्थ बने
तुम से है कौन बड़ा ?
गगन-सिंधु मित्र बने,
भूमि का भोगो सुख, नदियों का सोम पिओ
त्यागो सब जीर्ण वसन, नूतन के संग-संग चलते चलो!

अभ्यासमाला

बोध एवं विचार

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो :

1. कवि ने 'चलते चलो' का संदेश कवि ने किसे दिया है ?
2. कवि ने वसुधा को रत्नमयी क्यों कहा है ?
3. कवि ने किस-किस के साथ निरंतर चलने का संदेश दिया है ?
4. किन पंक्तियों में कवि ने मनुष्य की सामर्थ्य और अजेयता का उल्लेख किया है ?
5. निरंतर प्रयत्नशील मनुष्य को कौन-कौन से सुख प्राप्त होते हैं ?
6. 'रुकने को मरण' कहना कहाँ तक उचित है ?
7. कवि ने मनुष्य को 'तुमसे है कौन बड़ा' क्यों कहा है ?
8. 'युग के ही संग-संग चले चलो' - कथन का आशय स्पष्ट करो।
9. नरेश मेहता 'आस्था और जागृति' के कवि हैं- कविता के आधार पर सिद्ध करो।

1. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखो :

(क) जो दूसरों के अधीर हो
(ख) जो दूसरों के उपकार को मानता हो
(ग) जो बच्चों को पढ़ाते हैं
(घ) जो गीत की रचना करते हैं
(ङ) जो खेती-वारी का काम करता हो

भाषा एवं व्याकरण ज्ञान

2. **निम्नलिखित समस्त-पदों के विग्रह कर समास का नाम लिखो :**
   पीतांबर, यथाशक्ति, अजेय, धनी-निर्धन, कमल-नयन, त्रिफला
3. **निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग करो :**
   अपना उल्लू सीधा करना, आँखों का तारा, उन्नीस-बीस का अंतर,
   घी के दीए जलाना, जान पर खेलना, बाएँ हाथ का खेल

योग्यता-विस्तार

इस कविता के समान भाव वाली कोई अन्य कविता याद करके कक्षा में सुनाओ।

शब्दार्थ एवं टिप्पणी

चरैवेति = चलते रहो, एक वैदिक सूक्ति।
बंदी = दास, गुलाम।
रत्नमयी = रत्नों से सम्पन्न।
गगन-सिंधु = आकाश रूपी सागर, आकाश में सागर की कल्पना की गई है।
जीर्ण-वसन = फटे-पुराने वस्त्र, पुराने संस्कार एवं रूढ़ियाँ।